पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-डी.एल. (एन.)/084/2012-14 प्रकाशित: 16.10.2013 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

।। ओ३म् ।।

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

दीपावली
के शुभ अवसर पर
अपने
केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्
को भी
101/- रू.
का आर्थिक सहयोग
देना न भूलें

वर्ष-30 अंक-10 कार्तिक-2070 दयानन्दाब्द 190 16 अक्टूबर से 31 अक्टूबर 2013 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.10.2013, E-mail : aryayouth@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

दिल्ली देहात के सुप्रसिद्ध गुरूकुल खेड़ाखुर्द का उत्सव सौल्लास सम्पन्न

दिल्ली देहात के सुप्रसिद्ध गुरूकुल खेड़ाखुर्द का उत्सव सौल्लास सम्पन्न हुआ। नये ब्रह्मचारियों का स्वामी विश्वानन्द जी ने यज्ञ करवा कर उपनयन संस्कार करवाया। श्री ताराचन्द बंसल यज्ञमान बने। चित्र में प्रधान श्री ब्रह्मप्रकाश मान का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य, महेन्द्र भाई, रामकुमार सिंह, मनोज मान, राजेश मान। समारोह का संचालन मंत्री जोगेन्द्र मान व आचार्य सुधांशु जी ने किया।

आर्यो के तीर्थ स्थल आत्म शुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ का उत्सव सम्पन्न

बुधवार, 2 अक्तुबर 2013, बहादुरगढ़ स्थित आत्म शुद्धि आश्रम का उत्सव स्वामी धर्ममुनि जी के सानिध्य में सौल्लास सम्पन्न हुआ। डा.अनिल आर्य, मा.सोमनाथ आर्य, श्री ब्रह्मजीत आर्य, श्री चर्तुभुज बंसल, माता विद्या जी, श्री रमेश कुमार, श्री प्रभुदयाल चौटानी का उद्बोधन हुआ। श्री ओम सपरा का स्वागत किया गया। श्री राजवीर आर्य ने संचालन किया। श्री महेन्द्र भाई, श्री सुरेन्द्र बुद्धिराजा, श्री चन्द्रभान चौधरी आदि उपस्थित थे।

विश्व अहिंसा क्रिकेट टूर्नामेन्ट में युवकों ने शाकाहार की शपथ ली

बुधवार, 2 अक्तुबर 2013, जैन समाज व केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के सयुंक्त तत्वावधान में दिल्ली के भारत नगर स्कूल मैदान में विश्व अहिंसा कप क्रिकेट टूर्नामेन्ट का भव्य आयोजन किया गया। श्री महेन्द्र भाई ने यज्ञ करवाया। डा.अनिल आर्य, डा.महेन्द्र नागपाल, श्री स्वदेशभूषण जैन (पंजाब केसरी), श्री सुभाष जैन, श्री अशोक जैन, श्री पारस जैन आदि गणमान्य जन उपस्थित थे। श्री गोपाल जैन, श्री संजय जैन, श्री रामनिवास कश्यप ने कुशल संचालन किया।

‘श्राद्ध’ का यथार्थ स्वरूप

- मनमोहन कुमार आर्य

जब भी कोई चीज पुरानी होती है तो उसमें विकार एवं परिवर्तन आ जाते हैं। इन विकारों के कारण उसका वास्तविक स्वरूप विलुप्त हो जाता है। ऐसे समय में मनीषी एवं विवेकी पुरूष ही विकारों को पहचान पाते हैं और उसके यथार्थ व वास्तविक स्वरूप को जन सामान्य में प्रकट करते हैं। ऐसा ही उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भी हुआ। सन् 1824-75 के समय में हमारा प्राचीन वैदिक धर्म अपना मूल स्वरूप खो चुका था। उस यथार्थ वैदिक धर्म का स्थान पौराणिक अथवा हिन्दू मत या सम्प्रदाय ने ले लिया था। इसे पौराणिक या हिन्दू धर्म के नाम से भी पुकारा जाता है। हमें लगता है कि धर्म से पूर्व या तो मानव धर्म होना चाहिये अथवा वैदिक धर्म का प्रयोग ही उचित है। प्राचीन शुद्ध आचरणों व कर्तव्यों के लिए धर्म के पूर्व सनातन शब्द का प्रयोग भी किया जा सकता है। परन्तु यदि यही शब्द किसी पश्चातवर्ती मत या सम्प्रदाय या प्राचीन धर्म के विकृत स्वरूप, आचरणों व कर्तव्यों के साथ प्रयोग किया जाता है तो सनातन शब्द का इस प्रकार से प्रयोग स्वीकार नहीं किया जा सकता। इसी प्रकार धर्म से पूर्व हिन्दू, पौराणिक या अन्य शब्दों का प्रयोग भी उचित नहीं है। अतः धर्म शब्द के वास्तविक स्वरूप पर विचार कर लेना उचित होगा।

आईये देखते हैं कि धर्म शब्द का प्राचीनतम् प्रयोग कहां और किस अर्थ में हुआ है और क्या धर्म का प्राचीन अर्थ वर्तमान समय में भी व्यवहृत है अथवा नहीं। धर्म शब्द का मुख्य अर्थ किसी पदार्थ का वह गुण होता है जो उसमें सदैव निहित या वर्तमान रहता है। यदि वह गुण उस पदार्थ से पृथक हो जाये तो उस पदार्थ का स्वरूप बदल जायेगा और उसमें जो नये गुण होगें उसी के अनुसार उसका नामकरण या संज्ञा होगी। अग्नि का गुण गर्मी देना, प्रकाश देना, जलाना आदि है। इसी प्रकार जल का मुख्य गुण शीतलता, मनुष्य या पशु-पक्षियों की पिपासा को शान्त करना आदि हैं। जब हम मनुष्यों के सन्दर्भ में धर्म की बात करते हैं तो धर्म का अर्थ होता है मनुष्य का आचरण। आचरण में जो करणीय आचरण हैं, वह धर्म है और जो करणीय नहीं हैं, वह अधर्म है। संसार के सभी देशों के मनुष्यों की रचना व उत्पत्ति का तरीका समान है। इससे एक तो यह निष्कर्ष निकलता है कि सभी मनुष्यों का रचयिता व ईश्वर एक है। दूसरा यह भी कि उन सबका कर्तव्य अर्थात् धर्म भी एक ही होना चाहिये। आचरण एवं कर्तव्यों की परस्पर भिन्नताओं का समाज के विद्वानों व आचार-शास्त्रियों को, ज्ञान व निष्पक्षता से, समाधान करना चाहिये और सभी को उनको मानना चाहिये। यह समाज शास्त्री वस्तुतः धर्म के संशोधक व धर्म के रक्षक होते हैं। आजकल के समाज शास्त्री सामाजिक मान्यताओं, आचरणों व कर्तव्यों के संशोधन का कार्य न करने के कारण अपना दायित्व ठीक से पूरा नहीं कर रहे हैं। आज का समाज शास्त्र ऐसा है कि किसी भी मत-सम्प्रदाय की किसी भी गलत मान्यता के बारे में कुछ न कहा जाये। संसार में सभी मानते हैं कि मनुष्यों को सत्य बोलना, सत्याचरण करना ‘धर्म’ और झूठ बोलना या असत्याचरण करना ‘अधर्म’ या गलत है। इसी प्रकार दूसरों को ज्ञान देना, सहायता करना, असहायों की सेवा व सहायता, निर्बलों की रक्षा, अत्याचारियों का नाश व ह्वास, सज्जनों की रक्षा, सहायता व सेवा आदि सभी मत-सम्प्रदायों में स्वीकार किये जाते हैं। यही वास्तविक धर्म है। इनके विपरीत व परस्पर भिन्न, सभी करणीय व अकरणीय बातें, धर्म या अधर्म हैं। यदि वह मनुष्यों व सम्पूर्ण प्राणि जगत के लिए लाभकारी हैं तो वह धर्म हैं और यदि वह ऐसी नहीं है तो उनकी अधर्म संज्ञा होगीं। यदि किसी भी मत या सम्प्रदाय में प्राणियों के प्रति किसी भी रूप में हिंसा का भाव है या दिखाई देता है तो वह अनुचित व अधर्म कोटि में आयेगा भले ही उसे माना जाता हो। उसी प्रकार आवश्यकता से अधिक व अनुचित तरीकों से धनोपार्जन करना भी अधर्म की श्रेणी में आता है। अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए किया गया कार्य भी अनुचित है। यदि निःस्वार्थ भाव से कोई भी कार्य किसी के व्यक्तिगत, सामाजिक या देश हित में किया जाता है तो वह स्वतः धर्म की श्रेणी में आता है। अतः हमने धर्म को जान लिया है। मत व सम्प्रदाय इनसे भिन्न होते हैं। मत व सम्प्रदाय को कोई मनुष्य या इसी प्रकार का ऐतिहासिक व्यक्ति आरम्भ करता है। हो सकता है कि मत व सम्प्रदायों की अधिकांश बातें सत्य हों व धर्म की श्रेणी की हों परन्तु यह पाया जाता है कि मत व सम्प्रदायों की सभी बातें सत्य या धर्म कोटि की नहीं होती। उनमें कहीं न कहीं अज्ञान व गुप्त व लुप्त स्वार्थ भी होता है जिसे सामान्य जन जान नहीं पाते। बहुत दिनों तक उनके चलने पर फिर वह मत की आवश्यकता हो जाते हैं। अज्ञानता व स्वार्थो के कारण उस मत के अनुयायी उन्हें छोड़ नहीं पाते जिसका एक कारण उस मत के अस्तित्व को खतरा पैदा होने की आशंका का होना भी है और दूसरा उसके मत के प्रवर्तकों व नेताओं आदि के स्वार्थो को हानि पहुंचना होता है। सभी मतों में ऐसा होना आम बात है। परीक्षा करने पर वैदिक मत ही ऐसा मत सिद्ध होता है कि जिसमें असत्य कुछ भी नहीं है। वैदिक मत ही स्वयं में पूर्ण मत व धर्म हैं जिसमें मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त एवं मृत्यु के बाद मोक्ष व मुक्ति तक के करणीय आचरणों का वैज्ञानिक व तर्क संगत ज्ञान है। अन्य मतों में मुख्यतः मोक्ष व मुक्ति के बारे में जो ज्ञान है, वह वैदिक मान्यताओं की तुलना में हेय है। वैदिक धर्म एक मात्र मत है कि जो दुनियां के लोगों को आमंत्रित करता है कि वह इसकी सभी मान्यताओं पर विवेचना करें एवं अपनी आशंकाओं का निवारण प्राप्त करें। यह बात अन्य मतों में नहीं है। इस कारण यह मत ही दुनिया के सभी लोगों के लिए करणीय, माननीय एवं आचरणीय है। मृतकों को भोजन व वस्त्र आदि की आवश्यकता नहीं है। अतः उनका किसी प्रकार से न तो श्राद्ध हो सकता है और न ही किया जाना चाहिये। हां जीवित माता-पिता व पितर आदि की सेवा-सुश्रुषा के द्वारा उनका श्राद्ध नियमित व प्रतिदिन करना चाहिये। यही विज्ञान सम्मत है व भारतीय संस्कृति है और यही सत्य व शास्त्रों से भी सम्पुष्ट हैं। यदि किसी प्राचीन व एक शताब्दी या दो शताब्दी पुरानी पुस्तक में धर्म सम्बन्धी अच्छी बातों के साथ तर्क हीन, वेदविरूद्ध व अवैज्ञानिक एवं अविवेकपूर्ण बातें लिखी हों तो वह विष सम्पृक्त अन्न के समान त्याज्य कोटि के ग्रन्थों में परिगणित होता है और होना भी चाहिये।

उपर्युक्त विवेचन से धर्म का वास्तविक रूप सामने आ गया है। आईये अब ‘श्राद्ध’ शब्द का भी विवेचन करते हैं। श्राद्ध शब्द कुछ कर्मों या क्रियाओं का द्योतक है। श्रद्धा एक गुण है जो सत्य में दृढ़ आस्था, निष्ठा, समर्पण व संकल्प को अन्तर्निहित किए हुए है। कोई भी कार्य यदि सत्य पर आधारित है और आस्था, निष्ठा व संकल्प के साथ किया जाता है तो वह स्वयं में श्राद्ध का कार्य है। माता, पिता व आचार्यो का सन्तानों व शिष्यों पर सबसे अधिक ऋण है। माता-पिता मुख्यतः जन्म, ज्ञान, शिक्षा, संस्कार देने व पालन-पोषण करने व आचार्य शिक्षा व संस्कार देने के कारण पूज्य हैं। इनकी सेवा पूरी श्रद्धा-भक्ति एवं तन-मन-धन से सभी सन्तानों व शिष्यों को करनी चाहिये। माता-पिता व आचार्य अपनी सन्तानों व शिष्यों से क्या अपेक्षा करते हैं? वह अपेक्षा करते हैं कि उनका आदर-सत्कार, भोजन, वस्त्र, धन, सेवा, चिकित्सा या ओषधि प्रदान करना आदि कार्य उनकी सन्तानें व शिष्यगण करें। बस यही ‘श्राद्ध’ है। इन कार्यो में सत्य है एवं यह वेदों से पूर्णतया समर्थित है। किसी मत व सम्प्रदाय का इन बातों से कहीं विरोध नहीं है। आज जो सेवा करेगें तो कल वह भी, आज के युवा, वृद्ध व निर्बल होने पर सेवा व सहायता के पात्र होगें और उन्हें दूसरों से अपनी सेवा-सत्कार की आवश्यकता होगी। इस श्राद्ध अर्थात् पितृ-यज्ञ की परम्परा से वर्तमान के जीवित माता-पिताओं व आचार्यो को तृप्ति व सन्तुष्टि मिल रही है एवं इस परम्परा से भावी जीवित माता-पिताओं व आचार्यो को भी सेवा आदि का लाभ होगा। कोई इससे छूटेगा या बचेगा नहीं। सेवा करवाने वाले सेवा करने वालों के प्रति अनुग्रहित होते हैं और उन्हें अपना ज्ञान, अनुभव व विरासत एवं धन-सम्पत्ति एवं सबसे बड़ी चीज आर्शीवाद देते हैं। आशीर्वाद बहुत बड़ी चीज है जो पैसों से खरीदी नहीं जा सकती एवं केवल श्रद्धा, सेवा व सच्चा प्रेम प्रदशित करने आदि से ही प्राप्त होती है। सत्पुरूषों का आशीर्वाद अवश्य फलीभूत होता है। इसमें हमारे शास्त्रों की साक्षी भी है और अनुभव से भी यह बात सत्य सिद्ध हुई है। अतः श्राद्ध मनुष्य जाति के लिए परम आवश्यक करणीय सामाजिक एवं धार्मिक कार्य है। यह सेवा-श्राद्ध आदि हम केवल जीवित लोगों का ही कर सकते हैं। अतः आईये अब विचार करते हैं कि क्या मृतक को श्राद्ध से कोई लाभ होता है या यह केवल अज्ञान व स्वार्थो पर ही आधारित है।

अतः बुद्धि विरूद्ध, ज्ञान विरूद्ध, वेद विरूद्ध, विना स्वयं परीक्षा किए किसी भी बात को नहीं मानना चाहिये। सत्य के ग्रहण करने एवं असत्य के त्यागने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये। प्रत्येक कार्य सत्य व असत्य को विचार करके करने चाहिये। अविद्या का नाश एवं विद्या की वृद्धि करनी चाहिये। सत्य को ग्रहण किए बिना व आचरण में लाए बिना किसी मनुष्य या पूरी मनुष्य जाति की उन्नति नहीं हो सकती। मनुष्यों को केवल भौतिक उन्नति में ही सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिये अपितु ईश्वरोपासना, यज्ञ, स्वाध्याय, सेवा व सत्संग आदि से आध्यात्मिक पूंजी अर्जित करनी चाहिये जो जन्म-जन्मान्तर में साथ जाती है और अभ्युदय व निःश्रेयश की सिद्धि कराती है।

हमने अपने माता-पिता को देखा है। उन्होंने हमें जन्म देने के साथ, शिक्षा, संस्कार दिये और हमारा पालन-पोषण किया। गुरूओं व आचार्यो ने हमें ज्ञान व शिक्षा दी। आज हमारे माता-पिता जीवित नहीं है। दादी-दादाजी भी नहीं है और उनसे पहले की पीढ़ियां भी नहीं है। अनेक आचार्य भी परलोक गामी हो चुकें हैं। जब वह जीवित थे तो हम उन्हें ‘नमस्ते’ के अभिवादन से सम्मान देते थे। अब नहीं हैं तो नहीं दे सकते। मरने के बाद शास्त्रों एवं विज्ञान की मान्यताओं के अनुसार मृतक व्यक्तियों एवं उनकी आत्माओं से मिलना असम्भव है। मृत्यु के पश्चात उनके कर्मानुसार उनका पुनर्जन्म हो जाता है। हमारी भी इस जन्म से पूर्व मनुष्य अथवा किसी अन्य योनि में जीवन व जन्म था। वहां मृत्यु हो जाने पर हमें यह जीवन व जन्म मिला। अब मृत्यु होने पर पुनर्जन्म अवश्यम्भावी है। यह हमें स्वाध्याय से अर्जित ज्ञान व विवेक से ज्ञात हुआ है। मरे हुओं को हम भोजन या वस्त्र आदि, किसी या किन्हीं भी साधनों से, नहीं पहुंचा सकते और न हि मरे हुओं को इन सब चीजों की कुछ भी आवश्यकता होती है। यह वस्तुएं जीवित शरीर की आवश्यकतायें हैं न कि आत्मा की। अतः मरें हुओं का श्राद्ध युक्तिसंगत नहीं है। वेदों में, जो धर्म के मूल, संसार के प्राचीनतम ग्रन्थ, ईश्वरीय ज्ञान व धर्मशास्त्र हैं, उनमें मृतकों के लिए किसी भी कर्तव्य का विधान नहीं है। क्योंकि न तो मृतक को आवश्यकता है और न हि हम उन्हें कुछ पहुंचा सकते हैं। अतः धर्म के नाम पर मृतकों का श्राद्ध करना उचित नहीं ठहरता। हां जीवित माता-पिता व आचार्यो का श्राद्ध किया जाना चाहिये जैसा कि उपुर्यक्त पंक्तियों में विवेचन किया गया है। मरें हुए व्यक्तियों के हम ऋणी हैं और उन्हें चुकाने के लिए हमें शास्त्रानुसार कर्तव्य करना है। शास्त्रों के अनुसार हमारे ऊपर 3 ऋण है। ऋषि ऋण, देव ऋण और पितृ ऋण। सृष्टि के आरम्भ से अब तक हुए ऋषियों, आचायों व विद्वानों, जो दिवंगत हो चुकें हैं, के ऋण को चुकाने के लिए हमें वर्तमान के ऋषियों, विद्वानों व सच्चे आचायों का सम्मान करना है व उनकी सुख-सुविधाओं का ध्यान रखना है। इसी के साथ प्राचीन ऋषि-मुनियों की विरासत के रूप में जो वेद, सत्य, विज्ञान व तर्क सम्मत बौद्धिक सम्पदा उपलब्ध है उसके शोधपूर्ण सम्पादन व प्रकाशन, स्वाध्याय, अनुशीलन, व्याख्यान-प्रवचन व अनुसंधान एवं शोध द्वारा उनकी रक्षा व सम्पुष्टि आदि का कार्य भी उन ऋषियों के ऋण से उऋण होने के लिए श्राद्ध के रूप में हमें करने हैं। यदि हम ऐसा नहीं करेगें तो वह साहित्य नष्ट हो जायेगा जिससे हमारा धर्म व संस्कृति भी सुरक्षित नहीं रह सकेगी। आज जो धर्म व संस्कृति का ह्वास व अवमूल्य हुआ है उसका कारण भी हमारा वेदों व वैदिक साहित्य का उचित रीति से अध्ययन-अध्यापन द्वारा संरक्षण न कर उससे भिन्न सरल व सहज मार्गो का अवलम्बन है। देव ऋण के लिए माता-पिता-आचार्यो को सदैव जीवन भर अपनी सेवा व आदर-सम्मान से सन्तुष्ट रखना है। जड़ देवों पृथिवी, अग्नि, जल, वायु एवं आकाश की पूजा के अन्तर्गत उनका न्यूनतम उपभोग करते हुए पर्यावरण को प्रदूषित नहीं होने देना है। यथा-सम्भव व अधिकाधिक अग्निहोत्र यज्ञ करके वायु, जल, पृथिवी व आकाश आदि को शुद्ध व पवित्र रखना है। पितृ ऋण के अन्तर्गत भी माता-पिता, ऋषि एवं आचार्यो की ही सेवा-सुश्रुषा एवं सेवा-भक्ति से उन्हें प्रसन्न व सन्तुष्ट रखना है जिससे वह पूर्णतः तृप्त रहें। यही माता-पिता-आचार्य, दादा-दादी व परदादा-परदादी एवं ऋषियों आदि का श्राद्ध एवं तर्पण है। हमारे विवेचन से यह निष्कर्ष निकलता है कि मृतकों को भोजन व वस्त्र आदि की आवश्यकता नहीं है। अतः उनका किसी प्रकार से न तो श्राद्ध हो सकता है और न ही किया जाना चाहिये। हां जीवित माता-पिता व पितरों यथा विद्वान, आचार्यो, योगियों, समाज के सम्मानित व्यक्तियों आदि की, उनके प्रति आदर-सम्मान की भावना एवं सेवा-सुश्रुषा के द्वारा, उनका श्राद्ध नियमित व प्रतिदिन करना चाहिये। यही वैज्ञानिक व भारतीय संस्कृति है और यही सत्य, विज्ञान व शास्त्रों से भी सम्पुष्ट हैं। यदि किसी प्राचीन व एक शताब्दी या दो शताब्दी पुरानी पुस्तक में धर्म सम्बन्धी अच्छी बातों के साथ तर्क हीन, वेद-विरूद्ध व अवैज्ञानिक एवं अविवेकपूर्ण बातें लिखी हुईं हों तो वह विष सम्पृक्त अन्न के समान त्याज्य कोटि के ग्रन्थों में परिगणित होते हैं और होने ही चाहिये क्योंकि इससे मानव जाति को कोई लाभ तो होता नहीं अपितु हानि होती है। यदि किसी ग्रन्थ व पुस्तक में मृतकों के श्राद्ध का विधान है तो दो बातें हो सकती हैं, पहला - वह कथन मूल ग्रन्थकार का न होकर प्रक्षिप्त हो या दूसरा, ग्रन्थकार ने अपने किसी स्वार्थ, अज्ञान व अविवेक के कारण उसका विधान किया हो। ऐसा भी देखने को मिलता है कि कई अज्ञान व स्वार्थी लोगों ने प्राचीन ऋषियों मुनियों के नाम से ग्रन्थ बनायें हैं। उनका प्रयोजन यह रहा है कि ऋषियों मुनियों के नाम से वह समाज में आदर पा जायेगें और अतीत में ऐसा ही हुआ भी है। अतः बुद्धि विरूद्ध, ज्ञान विरूद्ध, वेद विरूद्ध, बिना स्वयं परीक्षा किए किसी भी बात को नहीं मानना चाहिये। इसकी क्रम में यह कहना भी समीचीन है कि वेद में मृतक पितरों के श्राद्ध का विधान नहीं है। अनेक पुराणों में इसका विधान बताया जाता है। अब यह देखना है कि वेद प्रमुख हैं या कि पुराण? वेदों को राम, सीता, कृःण, द्रोणाचार्य, वेदव्यास आदि मानते रहे हैं। अतः स्वाभाविक है कि वेद मुख्य हैं और इन्हें कदापि नहीं छोड़ा जा सकता। पुराणों की बात परवर्ती एवं मिथ्या सिद्ध है, अतः इसी को छोड़ना है। मृतकों के श्राद्ध का पुराणों व अन्यत्र विधान सभी शास्त्रों द्वारा समर्थित पुनर्जन्म के सिद्धान्त के भी विरूद्ध है। जब मृतक आत्मा का पुनर्जन्म हो जाता है तो फिर उसे अपनी योनि का भोजन मिलता ही है जैसा कि हम वर्तमान में भिन्न-भिन्न योनि के प्राणियों को भोजन करते हुए देखते हैं। अतः मृतकों का श्राद्ध करना अनावश्यक एवं ज्ञानहीन कृत्य है। ऐसा करके कोई पुण्यार्जन नहीं होता। पुनर्जन्म शास्त्रीय प्रमाणों के अतिरिक्त युक्तियों व यत्र-तत्र होने वाली घटनाओं से भी सिद्ध है। अतः मृतक श्राद्ध असत्य, अनावश्यक, अशास्त्रीय, आप्त प्रमाण विहीन व विरूद्ध सिद्ध हो गया है।

196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001,दूरभाषः 09412985121

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 35 वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में
युवा विद्वान आचार्य अखिलेश्वर जी महाराज के ब्रह्मत्व में आर्य नेता डॉ. अशोक कुमार चौहान की अध्यक्षता में

251 कुण्डीय विराट् यज्ञ

आशीर्वाद : स्वामी सुमेधानन्द जी, स्वामी दिव्यानन्द जी, स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी धर्ममुनि जी

अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक : 24, 25, 26 जनवरी 2014 (शुक्र, शनि व रविवार)

स्थान : रामलीला मैदान, पी.यू.ब्लाक, पीतम पुरा, दिल्ली-34 (निकट कोहाट एन्कलेव मैट्रो स्टेशन)

विराट् शोभा यात्रा, शुक्रवार 24 जनवरी, 2014, प्रातः 10.30 बजे

शुभारम्भ : रामलीला मैदान, पी.यू.ब्लाक, पीतम पुरा, दिल्ली से प्रारंभ होगी

मुख्य आकर्षण

आर्य महिला सम्मेलन ● राष्ट्रीय वेद सम्मेलन ● शिक्षा-संस्कृति निर्माण सम्मेलन
संगीत संध्या ● व्यायाम प्रदर्शन ● राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
प्रातः से रात्रि निरन्तर तीनों दिन ऋषि लंगर की सुन्दर व्यवस्था

1.बाहर से आने वाले आर्य बन्धु व आर्य युवक अपने पधारने की व संख्या के बारे में 31 दिसम्बर2013 तक सूचित करने की कृपा करें जिससे भोजन व आवास आदि का उचित प्रबन्ध किया जा सके।
2.कृपया यजमान बनने के इच्छुक आर्य बन्धु , आर्य समाजें अपना यज्ञकुण्ड 31 दिसम्बर 2013 तक फोन न०. 9891142673,9868664800, 9871581398, 9999995017 पर आरक्षित करवा लें।

हज़ारों की संख्या में पहुँचकर आर्यसमाज की विराट् संगठन शक्ति का परिचय दें

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत), **नई दिल्ली**

कार्यालय : आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली-110007 दूरभाष : 9810117464, 9013137070, 9868064422, 9958889970

वैदिक योग आश्रम आनन्दधाम, हरिद्वार, में योग साधना शिविर सम्पन्न

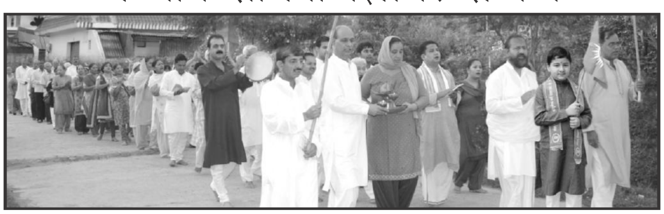

वर्तमान युग में मानव का जीवन सामान्यतः तनावपूर्ण सा हो गया है। जिसका दुष्परिणाम कई बार अप्रिय घटनाओं के रूप में देखने को मिलता है। तनाव से मानसिक संतुलन तो बिगड़ता ही है, साथ ही साथ भिन्न-भिन्न प्रकार की बीमारियों से शरीर भी ग्रसित हो जाता है। इस तनाव समस्या के समाधान के रूप में योग-प्राणायाम, साधना संध्या आदि क्रियाएं अत्यंत प्रभावी एवं लाभदायक प्रमाणित हुई है। दिनचर्या में उचित समय पर अभ्यास से जीवन सरल और सहज बन जाता है।

वैदिक योग आश्रम आनन्दधाम हरिद्वार में वर्ष में दो बार आयोजित होने वाली शिविर श्रृंखला में 2 से 6 अक्तूबर तक चला यह शिविर संस्थापक एवं कुशल संचालक आर्य विद्वान आचार्य अखिलेश्वर जी के दिशा-निर्देश में पूर्ण सफल एवं सम्पन्न हुआ, जिसमें भिन्न-भिन्न प्रदेशों से आए लगभग 130-40 साधकों ने योग-प्रशिक्षण एवं अध्यात्म लाभ प्राप्त किया। प्रतिदिन प्रातः 4 बजे से रात्रि 9 बजे तक की निर्धारित दिनचर्या में योग साधना, अग्नि होत्र, अखण्ड गायत्री जाप, गीता कथा, योग चर्चा, मौनावस्था, भ्रमण, योग संध्या आदि उल्लेखनीय क्रियाओं का प्रत्यक्ष सुखद लाभ अनुभव किया गया। अखण्ड गायत्री जोत शोभा यात्रा दृश्य.... ज्योति स्थापना.. नव निर्मित भोजन कक्ष का उद्घाटन, वैदिक संध्या, सोमरस पूर्ण पूर्णाहूति दृश्य के ये कुछ पल अविस्मर्णीय बन जाते है। शिविर सुव्यवस्था में आश्रम पदाधिकारियों के साथ सभी का सहयोग प्रशंसनीय रहा। ध्वजारोहण तथा नवनिर्मित भोजन कक्ष उद्घाटन के लिए श्री जे.के. मेहता तथा श्री केवल जी का आगमन विशेष सराहनीय रहा। मार्ग-दर्शक मण्डल में मुख्यतः आचार्य अखिलेश्वर जी के साथ-साथ यज्ञोपाचार्य श्री आनन्द प्रकाश जी, आ. वेद प्रकाश जी, आ. वसन्त अधिकारी जी, माता सरोज जी एवं वेद पाठी माता इन्दु यति जी वानप्रस्थी ने भी ज्ञान चर्चा की। समापन्न अवसर पर कार्यालय अध्यक्षा श्रीमती सुवर्णा भारद्वाज ने सभी का धन्यवाद करते हुए वापसी यात्रा की शुभकामनाएं

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्

सहयोग : भारत विकास परिषद् पीतमपुरा शाखा
130 वें महर्षि दयानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में

एक शाम ऋषि दयानन्द के नाम

सोमवार, 4 नवम्बर 2013, सायं : 4 से 8 बजे तक
स्थान : दिल्ली हाट, पीतमपुरा, दिल्ली

मुख्य अतिथि
माननीया श्रीमती शीला दीक्षित
(मुख्यमन्त्री, दिल्ली सरकार)

अध्यक्षता
श्री प्रदीप तायल (पाइटैक्स ज्वैलर्स, पीतमपुरा)

यज्ञ ब्रह्मा : आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी
मुख्य यजमान :
श्रीमती एवं श्री दर्शन अग्निहोत्री, तिलक चान्दना, सुभाष गुप्ता, अशोक बत्रा

:-गायक कलाकार:-
नरेन्द्र आर्य "सुमन" एवं सुदेश आर्या

विशिष्ट अतिथि

श्री अनिल भारद्वाज (विधायक)	श्री श्यामलाल गर्ग (विधायक)
श्री रविन्द्र बंसल (विधायक)	श्रीमती रेखा गुप्ता (पार्षद)
श्रीमती ममता नागपाल (पार्षद)	श्री सुदेश भसीन (पूर्व पार्षद)
श्री सुरेश अग्रवाल (समाजसेवी)	श्री घनश्याम गुप्ता (समाजसेवी)
श्री के.एस.यादव (सीजीएम,ऐस्कॉर्टस)	श्री बी.बी.तायल (समाजसेवी)
श्री राजकुमार जैन (समाजसेवी)	श्री संजीव मिगलानी (समाजसेवी)
श्री ब्रह्मप्रकाश मान (समाजसेवी)	श्री वीरेन्द्र मान (काला)
श्री नीरज रायजादा (समाजसेवी)	श्री सुरेन्द्र कोहली (समाजसेवी)

आप सादर आमन्त्रित हैं

:- निवेदक :-

डॉ० अनिल आर्य राष्ट्रीय अध्यक्ष (9810117464)	आनन्द चौहान स्वागताध्यक्ष	महेन्द्र भाई राष्ट्रीय महामंत्री
अमित नागपाल स्वागत अध्यक्ष	दीपक सेठिया स्वागत मंत्री	रणसिंह राणा स्वागत मंत्री

राष्ट्रवादी शिव सेना प्रमुख श्री जयभगवान गोयल का जन्मोत्सव सम्पन्न

रविवार, 6 अक्तूबर 2013, श्री जयभगवान गोयल का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य, श्री रजनीश गोयन्का आदि। द्वितीय चित्र में श्री अवधेश कुमार का स्वागत करते डा.अनिल आर्य, श्री जयभगवान गोयल, श्री महेन्द्र भाई व चौ.ईश्वर सिंह।

आर्य समाज, रोहिणी, सैक्टर-4-5 का उत्सव सम्पन्न व डा.अनिल आर्य का स्वागत

रविवार, 6 अक्तूबर 2013, आर्य समाज, रोहिणी, सैक्टर-4-5, दिल्ली का उत्सव सौल्लास सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री विश्वनाथ कोहली की पुस्तक का विमोचन करते डा.अनिल आर्य, आचार्य सुखदेव तपस्वी, श्री सुरेन्द्र गुप्ता, प्रधान श्री कृष्ण कुमार छाबड़ा, श्री आनन्द जी। मंत्री श्री सुदेश डोगरा ने कुशल संचालन किया। द्वितीय चित्र में आदर्श नगर पंजाबी कल्चर सोसायटी के प्रधान श्री सुरेन्द्र कोहली डा. अनिल आर्य को तलवार भेंट कर सम्मानित करते हुए।

पार्षद रेखा गुप्ता व मनीष का अभिनन्दन व अर्जुन देव चड्डा सम्मानित

दिल्ली पीतमपुरा की निगम पार्षद श्रीमती रेखा गुप्ता व श्री मनीष गुप्ता का अभिनन्दन करते डा. अनिल आर्य, श्री रणसिंह राणा, आचार्य धूमसिंह शास्त्री व श्री सन्तोष शास्त्री। द्वितीय चित्र में आर्य समाज, रावतभाटा, राजस्थान में आयोजित समारोह में श्री अर्जुनदेव चड्डा का ''आर्य सेवाश्री'' से अभिनन्दन करते श्री नरदेव आर्य,श्री रेशमपाल सिंह, श्री योगेश आर्य, श्री ओमप्रकाश आर्य,श्री जी.एस.दूबे आदि।

श्री हरप्रसाद पथिक युवाओं के प्रेरणास्त्रोत

रविवार, 13 अक्तूबर 2013, ग्राम टीला गाजियाबाद में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में डा. अनिल आर्य ने कहा कि श्री हरप्रसाद पथिक युवाओं के प्रेरणास्रोत रहे। डा.वीरपाल विद्यालंकार, श्री महेन्द्र भाई, श्री आमोद शास्त्री, डा.दिवाकर आचार्य, श्री राजकुमार शास्त्री, श्री प्रेमपाल सिंह नागर आदि ने अपनी श्रद्धांजलि दी। श्री मायाप्रकाश त्यागी, श्री श्रद्धानन्द शर्मा, श्री सत्यवीर चौधरी, श्री प्रवीन आर्य,श्री यशोवीर आर्य, श्री प्रमोद चौधरी, श्री सुभाष सिंघल आदि ने आर्य समाज की अपूरणीय क्षति बताया। श्री अजय पथिक ने आभार व्यक्त किया।

आर्य समाजों के आगामी उत्सव

1. आर्य समाज, सन्देश विहार, दिल्ली का 22 वां वार्षिकोत्सव 24 अक्तूबर से 27 अक्तूबर 2013 तक मनाया जा रहा है। स्वामी सम्पूर्णानन्द जी के प्रवचन व श्रीमती कविता रानी के भजन होंगे।
1. आर्य समाज, जवाहर नगर, पलवल का 58 वां वार्षिकोत्सव 6 नवम्बर से 10 नवम्बर 2013 तक मनाया जा रहा है। स्वामी श्रद्धानन्द जी यज्ञ के ब्रह्मा रहेंगे।

शोक समाचार: विनम्र श्रद्धांजलि

1. श्री दुर्गाप्रसाद कालरा पूर्व प्रधान,आर्य समाज, प्रशान्त विहार, दिल्ली का गत 8 अक्तूबर 2013 को निधन हो गया।
2. आचार्या कमला जी गुरूकुल सासनी, हाथरस का गत दिनों निधन हो गया।
3. श्री सुखदेव कपूर(मंत्री,आ.स. सूर्य निकेतन, दिल्ली का गत दिनों निधन हो गया।
4. डॉ. अमर जीवन (प्रधान आर्य समाज, हनुमान रोड) का गत दिनों निधन हो गया।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970